आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:20-10-14

अपना परिचय देकर, इस बेहद के ड्रामा में अपना रोल हम आत्माओं को समझाकर, हमें निश्चय बुद्धि बनाने वाले बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम सदा के लिए एक सत के संग में रहो, तुम्हें मायावी कुसंग में नहीं जाना है, कुसंग लगने से ही संशय के रुप में घुटके आते हैं.

सर्व शास्त्र शिरोमणि श्रीमत् भागवत गीता में भी लिखा है कि निश्चय बुद्धि विजयंती, संशय बुद्धि विनश्यती. भगवान कहते है, मैं जो हूँ, जैसा हूँ – उसको ऐक्युरेंट पहचान कर, मेरे में पुरा निश्चय बुद्धि होकर मेरी कही हुई श्रीमत् पर चलते है तो उसका में कल्याण करता हूँ. यही बात प्रैक्टिकल में हम ब्राह्मणों के साथ हो रही हैं. जब हम आत्माये यह ईश्वरीय ज्ञान पहली बार सुनती है तब हमें अंदर से अहसास होता है कि यह ज्ञान कोई भी देहधारी मनुष्य नहीं दे सकता क्योंकि यह ज्ञान में ऐसी कई बातें है जो बिलकुल ही नई हैं. कोई भी वेद-शास्त्रों-उपनिषद या धर्मग्रंथों में यह बात है नहीं. बाबा ने हमें जो आत्मा, परमात्मा और सारी बेहद की सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, यह ज्ञान सिवाय स्वयं परमात्मा के और कोई नहीं दे सकता. यह ज्ञान तो उन्हें ही हो सकता है जो इस सारी सृष्टि का रचयिता हैं (रचयिता को ही रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान हो सकता हैं). तो हमने बाप को पहचाना है यह ईश्वरीय ज्ञान के आधार से या कहे हमें बाप में निश्चय हुआ है इस ज्ञान के आधार से.

हमारे निश्चय को और पक्का करने के लिए आज बाबा ने ज्ञान की ऐसी कई बातें आज की मुरली में कही है जो हम फिर से रिपिट करेंगे तो हम यही बात औरो को सुनाकर उनका निश्चय भी बाप में पक्का कर सकते हैं.

- बाबा कहते है, बच्चे जब यहॉ बैठते हो तो जानते हो बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है और सतगुरु भी है. पहले बाप, फिर पढ़ाने वाला टीचर और फिर पिछाड़ी में गुरु. बाप को याद भी ऐसे करना है. बच्चों को वन्डर लगता है क्योंकि बिलकुल ही नई बात है ना.

- बाप पुछते है, मीठे बच्चों, जन्म-जन्मान्तर तुम्हें ऐसा कोई मिला है जो कहे मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, टीचर भी हूँ और सतगुरु भी हूँ. एक ही जन्म में यह तीनों ही पार्ट तो एक परमात्मा के सिवाय किसी और आत्मा को नहीं मिल सकता. बाबा का यह पार्ट भी अभी संगमयुग पर ही होता हैं.

- यह फिर है बेहद का बाप, बेहद का टीचर और बेहद का सतगुरु. बेहद का माना सबका. सो है भी सुप्रीम.

- बेहद का बाप फिर नॉलेज भी बेहद की देते हैं. बाप कहते है हद की नॉलेज तो तुम अनेक बार जन्मो-जन्म पढ़ते आये हो, जिसे तुम डॉक्टर, जज, वकील आदि बनते हो. यह बेहद की नॉलेज तो इस सारे कल्प में तुम्हें एक ही बार संगमपर मिलती है जो २१ जन्मो के लिए फलीभूत होती है अर्थात उनका फल मिलता है.

- बाप कहते है सतयुग में डॉक्टर, बैरिस्टर, जज आदि होते ही नहीं, क्योंकि वहाँ दुख नहीं होता, कर्मभोग नहीं होता. सतयुग-त्रेता है ईश्वरीय प्रालब्ध. कर्मभोग होता है द्वापर-कलियुग में. सुप्रीम बाप ही एक्युरेंट कर्मों की गति बैठ तुम्हें समझाते हैं.

- बाप समझाते हैं, मैं तुम्हारा बेहद का बाप अर्थात सभी आत्माओं का बाप हूँ, पढ़ाता भी हूँ आत्माओं को. मुझको अपना शरीर नहीं हैं. मैं लोन लेता हूँ ब्रह्मा के शरीर का. मेरे सिवाय और कोई भी आत्मा अपने को स्प्रीचुअल फाधर अर्थात आत्माओं का बाप (रुहानी बाप) नहीं कह सकते.

- बाप कहते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी भव. देह का अभिमान छोड़ो. ऐसे तुमको सारे कल्प में और कोई भी जन्म में और कोई भी आत्मा नहीं कह सकती.

- बाप समझाते हैं, यह मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ है, जिसका बीजरूप मैं हूँ. मैं चैतन्य बीजरूप हूँ. मुझे कहते ही हैं ज्ञान का सागर. मुझ में ही सारे मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ की सारी नॉलेज हैं. मैं ही आकर अभी तुम्हें राजयोग सिखाता हूँ, जिसे तुम राजाओं के राजा बन जाते हो. मैं हूँ सब आत्माओं का बाप. मुझे पहचान ने से ही तुम बच्चों को वर्सा मिलता हैं. ऐसा मेरे सिवाय सारे संसार में और कोई नहीं कह सकता.

- बाप बैठ समझाते हैं, मुझको ही पतित-पावन कहा जाता है. कृष्ण के लिए त्वमेव माता च पिता वा पतित-पावन नहीं गाया जाता. बाप के मर्तबे में और कृष्ण के मर्तबे में रात-दिन का फर्क है. मुझे पहचान ने से तो आत्मा को सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिलती है, कृष्ण अगर भगवान होता तो उसे देखते ही कोई भी पहचान ले. कृष्ण का जन्म भी कोई दिव्य अलौकिक नहीं गाया हुआ है, माता के गर्भ से होता है सिर्फ पवित्रता से होता हैं. एक बाप के लिए ही कहा जाता है कि उनका जन्म माता के गर्भ से नहीं होता, बल्कि दिव्य अलौकिक होता हैं.

ॐ शांति.